>

Title: Need to include Bhojpuri language in the Eighth Schedule to the Constitution.

योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर): विश्व की सबसे बड़ी बोली भोजपुरी लगभग 70 हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में 16 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है । उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश तथा झारखण्ड में इसका प्रयोग व्यापक है । नेपाल के तराई क्षेत्र, मारिशस फिजी, ट्रिनिडाड, थाईलैण्ड, हालैण्ड, मलेशिया तथा सिंगापुर सहित 27 देशों में भी इसका व्यापक आधार है । ऋग्वेद में महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रयुक्त "भोज" शब्द जिससे भोजपुरी बनी, का उल्लेख तो है ही, महाभारत सहित विभिन्न धर्म-ग्रंथों होते हुए मालवा के राजा भोज, उज्जैन के भोज, गुर्जर प्रतिहार भोज, काशी तथा डुगराँव के भोज राजाओं का इतिहास भोजपुरी की व्यापकता, विशालता और प्राचीनता का गवाह है ।

संत साहित्यकारों गुरू गोरखनाथ जी, चौरंगीनाथ जी, योगिराज भतृहरि, कबीरदास, कमलदास, धरमदास, धरनीदास, पलटूदास, भीखा साहेब जैसे सैकड़ों संत साहित्यकारों, विचारकों और चिन्तकों ने अपनी लोक कथाओं, गीतों, लोकगाथाओं और लोकोक्तियों से भोजपुरी की पीढी दर पीढ़ी एक कंठ से दूसरे कंठ तक पहुंचाया । महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, डॉ, भगवतशरण उपाध्याय और चतुरी चाया जैसे रचनाकारों ने भोजपुरी गद्य साहित्य को नयी उंचाईयां प्रदान की ।

जैसा कि विदित है भारतीय संविधान के मूल रूप में 14 भाषाएं ही आठवीं सूची में थी । बाद में इसमें संशोधन कर सिन्धी, कोंकड़ी, नेपाली, मैनपुरी, मैथिली, डोंगरी, संथाली और बोडो को भी शामिल कर लिया गया । भोजपुरी संस्कृति इन सभी भाषाओं का आदर करते हुए यह जानना चाहती है कि जिस वजह से इन बोलियों का इस सूची में शामिल किया गया उनमें से क्या कोई एक भी तत्व ऐसा है जिसे भोजपुरी पूरी न करता हो । स्वाधीनता आंदोलन में भोजपुरिया क्षेत्र के राजा और रचनाकार सभी अंग्रेजों को भगाने के लिए कृतसंकल्प थे । वीर कुंवर सिंह, शहीद बंधू सिंह, चित्तू पाण्डेय, मंगल पाण्डेय जहाँ अपने पराक्रम से तो फिरंगियाँ, चरखवा, बरोहिया आदि भोजपुरी साहित्यकार अपनी रचनाओं में देशप्रेम की लौ जला रहे थे ।

1942 की क्रंति में समूचा भोजपूरी क्षेत्र उद्वेलित था । चौरीचौरा और बलिया की घटनाओं से अंग्रेज शासन कुपित थे, मगर अब तो हम आजाद हैं, हमारी अपनी सरकार है, यद्यपि गृह मंत्रालय ने भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की बात को सैद्धांतिक रूप से स्वीकार भी किया है, फिर भोजपुरी के साथ यह अन्याय क्यों?

हम 16 करोड़ लोगों की भावनाओं को समझते हुए भोजपुरी को तत्कल आठवीं सूची में शामिल किया जाये ।